# प्रकृति विज्ञान



**परम प्रकाश एक है। हर धर्म की मंजिल वही है। दीवार से बाहर निकलकर सत को पहचाने, धर्म एक विज्ञान है, यह जीवन भी एक विज्ञान है इसलिए वैज्ञानिक तरीके से धर्म की तरफ आगे बढें।**

विषय को पूरा करता है। धार्मिक किताबों में अस्त्र–शस्त्र के बारे में जो अंकित किया गया है वो इसी प्रकार आकृति स्वरूप होते थे। जो लक्ष्य को अवश्य पूरा करते थे। ये अस्त्र–शस्त्र पूर्ण वैज्ञानिक होते थे जो कि इच्छाशक्ति से तैयार होते थे। ये भौतिक पदार्थो द्वारा बनाए वैज्ञानिक अस्त्र–शस्त्र की तरह ही काम करते थे। जगत विज्ञान से परे नहीं है। आवश्यकता इस विज्ञान को पहचानने की है। आज भी कोई मानव इस वैज्ञानिकता से अपने आपको महान बना सकता है। शक्ति अर्जन करने की किया हर धर्म की एक जैसी थी। पर जिस संस्कृति सभ्यता में ऐसे महापुरुष पैदा हुए, उसका सम्मान करते हुए वे आगे बढ़े और उन्हीं के रीति–रिवाज में रहते हुए साधना से शक्ति प्राप्त किए। मानव उनकी शरीरिक किया और कर्मकांड को देखा पर साधक की भावना और आंतरिक किया को नहीं देख पाया। शारीरिक किया और कर्मकांड को धर्म मान लिया। इसी प्रकार से अलग–अलग नस्ल के अलग–अलग धर्म और संप्रदाय बन गए। पर हर धर्म के साधक की आंतरिक साधना प्रकिया एकसमान थी। यदि भेद है तो सभ्यता संस्कृति से प्रभावित कर्मकांड का है। साधना की आंतरिक प्रकिया में कोई भेद नहीं है। इसलिए हर धर्म के लोगों को दूसरे धर्म के साधक को सम्मान करना चाहिए। यदि सम्मान न कर सके तो उनका अपमान कभी नहीं करना चाहिए। अपमान करना अवैज्ञानिक होता है। ऐसा करने से जब विरोधी ऊर्जा निकलती है तो जिसके लिए ऊर्जा होती है उसके समर्थक की ऊर्जा उसे रोकती है। ऊर्जा की आपस की लड़ाई से व्यक्ति का नुकसान होता है।

मानव समाज अनेको धर्मों में बंट चुका है। जबकि धर्म तो एक होता है। जो सभी धर्म का एक है, यह वह उसी परम प्रकाश तक पहुंचता है। जो एक है उसे प्राप्त करने का तरीका भी एक है। वह तरीका है, जिसस्वरूप से व्यक्ति सबसे ज्यादा प्रभावित हो उसे अपना ईष्ट बनाए, प्रतिदिन उसका ध्यान करें, एक निश्चित समय पर ध्यान करने से विशेष लाभ मिलता हैं। शरीर से उसके प्रति प्यार हो, बाहय और आंतरिक नजर में सिर्फ वही हो, आत्मा उसी के रंग में रही हो। सांसो में उसी की सुगंध हो। इसके साथ–साथ जीवन का अधिक से अधिक समय उसी को याद करता हो। ऐसा करने से कोई भी व्यक्ति महान बन सकता है और परम प्रकाश तक पहुंच सकताहै। यह प्रकिया परम प्रकाश तक पहुंचने के लिए हर धर्म के लोगों को करनी पड़ती है। संप्रदाय से बाहर निकलकर धर्म की वैज्ञानिक प्रकिया को पहचानें और इसे जीवन में लाकर विशेष मानव बने। जिस प्रकार दीवार खड़ी कर लेने से ब्रहमांड को नहीं बांटा जा सकता है ठीक उसी प्रकार संप्रदाय बना लेने से धर्म को नहीं बांटा जा सकता है।

**जब शब्द धर्म एक है तो इसकी व्याख्या अनेक कैसे हो सकती है?**

बंटवारा धर्म का नहीं है। यह बंटवारा संप्रदाय का है। किसी भी संप्रदाय के माध्यम से व्यक्ति धर्म पर चलता है तो